Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

माँ महामाया मंदिर, अम्बिकापुर का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटनिक महत्व : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. अंजू तिवारी* अभिषेक वर्मा**

* सह प्राध्यापक (इतिहास) सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोधार्थी, सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – यह शोध पत्र अम्बिकापुर स्थित माँ महामाया मंदिर के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटनिक महत्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। माँ महामाया मंदिर न केवल स्थानीय जनता के लिए आस्था का केंद्र है, बल्कि छत्तीसगढ़ राज्य में धार्मिक पर्यटन का एक महत्वपूर्ण स्थल भी है। इस मंदिर की स्थापत्य कला, धार्मिक परंपराएँ, वार्षिक मेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने इसे एक जीवंत सांस्कृतिक धरोहर बना दिया है।
शब्द कुंजी– माँ महामाया मंदिर, अम्बिकापुर, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक धरोहर, ऐतिहासिक महत्व, स्थापत्य कला, नवरात्रि मेला, स्थानीय अर्थव्यवस्था, पर्यटन विकास, श्रद्धालु।

प्रस्तावना – भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराएँ प्राचीन काल से ही विविधता एवं गहराई से परिपूर्ण रही हैं। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट धार्मिक आस्थाएँ, लोक परंपराएँ और ऐतिहासिक विरासत रही है, जिन्होंने भारतीय समाज को एक गहन सांस्कृतिक एकता में बाँधा है। इन्हीं परंपराओं में शक्ति उपासना का विशेष स्थान रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य का अम्बिकापुर नगर, जिसे प्राचीन काल में 'सुरगुजा राज्य' के नाम से जाना जाता था, धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल रहा है। इस क्षेत्र में स्थित माँ महामाया मंदिर न केवल स्थानीय लोगों की आस्था का केंद्र है, बल्कि यह मंदिर प्राचीन काल से चली आ रही शक्ति साधना और देवी उपासना की एक जीवंत परंपरा को आज भी संजोए हुए है।

ऐतिहासिक परीक्षण से ज्ञात होता है कि माँ महामाया मंदिर का निर्माण लगभग 10वीं से 12वीं शताब्दी के बीच हुआ था। उस काल में यह क्षेत्र विभिन्न राजवंशों के अधीन था, जिन्होंने देवी उपासना को राज्य की धार्मिक व्यवस्था का केंद्र बनाया। मंदिर की स्थापत्य कला में नागर शैली के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जो उस युग की कलात्मक उत्कृष्टता और धार्मिक भावना को दर्शाते हैं। प्राचीन काल से ही यह मंदिर धार्मिक यात्राओं, नवरात्रि उत्सवों, मेला–परंपरा और सामुदायिक एकजुटता का प्रतीक रहा है।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य– माँ महामाया मंदिर अम्बिकापुर की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत का अभिन्न हिस्सा है। यह मंदिर सरगुजा रियासत की कुलदेवी के रूप में प्रतिष्ठित है और यहां की लोक आस्था तथा पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं का केंद्र माना जाता है। आधुनिकता एवं वैश्वीकरण के इस युग में पारंपरिक धार्मिक स्थलों का महत्व धीरे–धीरे बदल रहा है, इसलिए ऐसे प्राचीन स्थलों का गहन अध्ययन आवश्यक हो जाता है। इस शोध का उद्देश्य माँ महामाया मंदिर के ऐतिहासिक, पौराणिक और सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर करना तथा स्थानीय समाज में इसकी भूमिका को समझना है। मंदिर से जुड़ी मान्यताओं, किंवदंतियों, पूजा–पद्धतियों और राजपरिवार के योगदान का विश्लेषण कर इसे धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रस्तुत करना इस शोध का प्रमुख लक्ष्य है। साथ ही, शोध के माध्यम से यह भी जाना जाएगा कि यह मंदिर किस प्रकार क्षेत्र के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करता है और इसकी परंपराएं किस प्रकार आज भी जनमानस में जीवित हैं। मंदिर की महत्ता को दस्तावेजी रूप देना तथा इसके संरक्षण और प्रचार–प्रसार के लिए ठोस सुझाव प्रस्तुत करना इस शोध कार्य की मुख्य आवश्यकता एवं उद्देश्य हैं।

परिचय– माँ महामाया का मंदिर छत्तीसगढ़ राज्य के अम्बिकापुर नगर के नवागढ़ क्षेत्र में स्थित है। इसी महामाया अथवा अम्बिका देवी के नाम पर ही जिले के मुख्यालय का नाम 'अम्बिकापुर' रखा गया। मान्यता के अनुसार अम्बिकापुर स्थित महामाया मंदिर में देवी का धड़ विराजमान है, जबकि देवी का सिर बिलासपुर जिले के रतनपुर स्थित महामाया मंदिर में प्रतिष्ठित है। वर्तमान मंदिर का निर्माण सरगुजा राज्य के राजा रघुनाथ शरण सिंह देव ने सन् 1910 में कराया था। उसी समय एक पक्का कुआँ भी बनवाया गया था। इससे पहले माँ महामाया एक साधारण चबूतरे पर विराजमान थीं। उस समय जब राजपरिवार के लोग पूजा करने जाते थे तो वहाँ एक बाघ बैठा रहता था। सैनिकों द्वारा बाघ को हटाए जाने के बाद ही दर्शन संभव हो पाता था। महामाया के शीष का निर्माण ग्राम ऊँचडीह के कुम्हारों द्वारा प्रतिवर्ष मिट्टी से किया जाता है, जिस पर मोम की परत चढ़ाई जाती है। प्रसिद्ध किवदंती के अनुसार, पिंडारी लुटेरों द्वारा मूर्ति को चुराने के प्रयास में सिर काटकर रतनपुर ले जाया गया। रतनपुर के राजा रतनदेव को स्वप्न में देवी ने संदेश दिया, जिसके बाद लुटेरों का वध कर शीष को रतनपुर मंदिर में स्थापित किया गया।

इतिहासकार गोविंद शर्मा के अनुसार, रतनपुर और अम्बिकापुर दोनों मंदिरों में देवी को युगल रूप में स्थापित करने के लिए सिंहदेव परिवार की भगवती देवी ने मिर्जापुर से विंध्यवासिनी की प्रतिमा मंगवाई। माँ महामाया

की पूजा में आज भी पारंपरिक पद्धतियाँ लागू हैं। पट खोलने का अधिकार चेरवा जाति के बैगा को है, जबकि ब्राह्मण पुजारी वैदिक पूजा संपन्न कराते हैं। प्राचीन काल में यहाँ नरबलि दी जाती थी, तत्पश्चात पशु बलि की परंपरा चली। वर्तमान में मनोकामना पूर्ण होने पर बकरे की बलि दी जाती है। माँ महामाया सिंहदेव राजघराने की कुलदेवी हैं और आज भी राजपरिवार को गर्भगृह में विशेष पूजा का अधिकार है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य– माँ महामाया मंदिर अम्बिकापुर क्षेत्र की धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख केंद्र है। यह मंदिर देवी उपासना की प्राचीन परंपराओं से जुड़ा हुआ है और यहां नवरात्रि जैसे पर्व बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं। मंदिर में होने वाले अनुष्ठान, बली प्रथा, पट खोलने की परंपरा तथा स्थानीय लोकगीत इस क्षेत्र की विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। राजपरिवार द्वारा मां महामाया को कुलदेवी के रूप में पूजने की परंपरा आज भी जीवित है, जिससे यह मंदिर धार्मिक विश्वास के साथ-साथ सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बन गया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– अम्बिकापुर स्थित माँ महामाया मंदिर न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि यह क्षेत्र की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को भी समेटे हुए है। मंदिर से जुड़ी परंपराएं, अनुष्ठान और वार्षिक उत्सव स्थानीय समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक एकता को मजबूत बनाते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मंदिर न केवल श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक महत्तव रखता है, बल्कि यह स्थानीय अर्थव्यवस्था और पर्यटन के विकास में भी योगदान देता है।

इस शोध के आधार पर यह सुझाव दिया जाता है कि मंदिर के संरक्षण और रखरखाव पर विशेष ध्यान दिया जाए। साथ ही, स्थानीय प्रशासन और पर्यटन विभाग मिलकर मंदिर के आसपास सुविधाओं का विकास करें, ताकि श्रद्धालु और पर्यटक दोनों ही बेहतर अनुभव प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, मंदिर से जुड़ी किंवदंतियों, पूजा पद्धतियों और सांस्कृतिक परंपराओं का दस्तावेजीकरण कर इसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया जाना चाहिए। इस प्रकार, धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटनिक दृष्टि से मंदिर का महत्व और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. चटर्जी, डॉ. एस. – महामाया मंदिर और शक्ति उपासना परंपरा, भारतीय सांस्कृतिक शोध संस्थान, पृष्ठ 52।
2. अग्रवाल, डॉ. वी. एस. – भारतीय स्थापत्य कला और मूर्तिकला, विद्या भवन, पृष्ठ 135।
3. बाजपेयी, के. डी. – छत्तीसगढ़ का इतिहास, प्रकाशन विभाग, रायपुर, पृष्ठ 12।
4. सिन्हा, डॉ. आर. के. – सरगुजा संभाग का सांस्कृतिक इतिहास, छत्तीसगढ़ राज्य अभिलेखागार, पृष्ठ 67अ।
5. पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्ट – भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), छत्तीसगढ़ मंडल की वार्षिक रिपोर्ट।
6. क्षेत्रीय लोकसंस्कृति एवं पुरातत्व – छत्तीसगढ़ पुरातत्व परिषद्, रायपुर।
7. छत्तीसगढ़ की पुरातात्विक धरोहर – पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, छत्तीसगढ़ सरकार।
8. जनरल ऑफ इंडियन हिस्ट्री एंड कल्चर – इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च (ICHR) द्वारा प्रकाशित लेख।

****